JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''मानवता के दो आधार स्तंभ, इस्लाम एवं हिन्दू धर्म : एक–दूसरे के पूरक के रूप में''

*प्रो0 राम प्रवेष पाठक

**डॉ0 सबोध प्रसाद रजक

''अगर इंसान नफ़रत करना सीख सकता है तो वह प्यार करना भी सीख सकता है बल्कि यह ज्यादा आसान है।''– नेल्सन मंडेला

''न तो तुम बुरे हो और न ही हम बुरे हैं, हम दोनों ने एक–दुसरे को सही से पहचाना ही नहीं इसलिए एक–दूसरे को बुरा मान बैठे हैं। भ्रान्तियां भ्रम पैदा करती हैं और भ्रम अ''ाांति, असहिश्णुता व अहंकार को जन्म देती है। इसका एक मात्र समाधान धर्म व धर्म''ाास्त्रों की सही समझ है। भगवान और भक्त में कोई दोश नहीं है दोश मध्यस्था करने वाले लोगों (Mediater) में है जिसे हमें सुधारना या हटाना होगा। हम क्यों भूल जाते हैं कि मुरली के तानों में भी मोहब्बत है और मस्जिद के आज़ानों में भी मोहब्बत है।

हम यह क्यों भूल जाते हैं कि नमाज अदायगी के तरीकों में भी योग है और श्री हरि के वंदना में भी योग है। सभी धर्मों के सहृदय सच्चे सम्मान में ही समृद्धि, भाांति, सहिश्णुता व स्वर्ग प्राप्ति के बीज निहित है। किसी धर्म वि''ोश को जरूरत से ज़्यादा तवज्ज़ों देना किसी दूसरे धर्म की तोहीन करना है और जिससे धार्मिक पहचान (Religious Identity)' धार्मिक संकट (Religious Crisis) व अन्याय की अनुभूति (Sense of Injustice) के मुद्दे प्रश्रय पाते हैं, और इसके आड़ में ऐसे आन्दोलनों का उद्भव होने लगता है, जिसकी मंजिल की बात ही छोड़िए सफ़र के किसी पड़ाव में भी धर्म नज़र नहीं आता है।''

भूमिका :–

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना, भोजन का एक भी निवाला मुँह में डालने से पहले पड़ोसी के घर में पता करना कि उसके घर में भोजन बना है कि नहीं अगर नहीं बना है तो उस भोजन को आपस में बाँट लेना ही इस्लाम की संस्कृति है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई रहना है हमें मिलकर सब छोड़ लड़ाई, अनेकता में एकता और यही है कि इसकी सुंदरता, जहाँ जगत की हर वस्तु में नारायण नजर आता है, अहिंसा परमो धर्म, सत्य ही ई''वर है जैसी पंक्तियों में भारत को परिभाषित किया जाता है तो फिर पता नहीं किसने कौन सी लकीर खीच दी कि इस भारतभूमि के दो अभिन्न अंग एक–दूसरे से

* *भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग एवं संकायाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान संकाय, का''ाी हिन्दू वि''वविद्यालय, वाराणसी (उ0 प्रदे''ा)*

** *सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, गोड्डा महाविद्यालय, गोड्डा (झारखण्ड), पिन–814133 मो0–9162763947,* E-mail ID: subodhrajak11@gmail.com

इतनी दूर चले गए और आज तक संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण राजनीति, धर्म की दुकानदारी में दोनों मज़हबों की आम जनता एक–दूसरे से दूर होती जा रही है, इसलिए यह बेहद जरूरी है कि हम इस्लाम को सच्चे अर्थों में, पवित्र ग्रंथ कुरान शरीफ, हदीसों के शब्दों को सार रूप में एवं उसके मूल तत्त्वों के आलोक में समझें। इस्लाम जिसका अर्थ ही शांति (Peace) है, अमन, ईमान, सभी की खैरियत व पाक् ही जिस धर्म"ाास्त्र का पैगाम है। अल्लाह के रसूल मोहम्मद पैगम्बर साहब का अवतरण ही संसार में अमन, चैन व न्याय के लिए हुआ था। आज के आतंकवाद के किसी भी रूप को इस्लाम से जोड़ना, उसे इस्लामिक आतंकवाद कहना न सिर्फ इस्लाम की तोहिन होगी बल्कि इस्लाम के हमारी अधूरी समझ को भी बतलाती है। हमें इन तमाम आरोपों–प्रत्यारोपों की पड़ताल करनी होगी। हर आत्मा में मुझे परमात्मा और हर नर में नारायण नजर आता है, कर्त्तव्यों के सहृदय पालन, सर्वहित में निज हित देखने की दृष्टि, अपरिग्रह, अस्तेय, सत्य, अहिंसा ही जिस हिन्दू धर्म का अलंकार हो। जहां यह भी माना जाता हो कि भगवान मन्दिरों में नहीं लोगों के मन में बसते हो। वह धर्म संपूर्ण जगत के लिए कल्याणकारी ही हो सकता है न कि विना"ाकारी। लेकिन जब भगवान को मन से निकालने की चेष्टा की जाती है, उसे जबरदस्ती मंदिरों में, मठों में बसाया जाता है, कर्मकांड किए जाते हैं। एक भगवान के नाम पर इन्सान को बाँटा जाता है। एक भगवान के घर को तोड़कर दूसरे भगवान को बसाने का प्रयास किया जाता है और इस हेतु धर्म के नाम पर अधर्म, भगवान के रखवाली व रक्षा के नाम पर इन्सानियत को तार–तार किया जाता है और मीडिया में नया शब्द गढ़ा जाता है, **'भगवा आतंकवाद'**। फिर यह चर्चा आम हो जाती है कि **'इस्लामिक आतंकवाद'** के प्रत्युत्तर में **'भगवा आतंकवाद'** ने आकार ग्रहण कर लिया है। इस्लाम के तथाकथित ठेकेदारों ने **'इस्लामिक आतंकवाद'** के नाम पर इस्लाम को कठघरे में खड़ा कर रखा है तो हिन्दू धर्म के ठेकेदारों ने अघोषित भगवा आतंकवाद का झंडा लहराकर हिन्दू धर्म के आत्मा पर कुठारघात किया है। हमें इन आडंबरकारी धार्मिक पहचान की पड़ताल वेहद बारीकी से करनी होगी क्योंकि कोई भी धर्म हिंसा, अपराध व आतंक की इजाजत नहीं देता है हर धर्म इन्सानियत, मानवतावाद, अहिंसा पर आधारित है। एक सच्चा मुसलमान वही हो सकता है जो–***कुरान भारीफ के तमाम सुराओं, आयतो को अपने जीवन में उतारते हुए बड़े ही जिन्दादिली से यह कहता हो कि मेरे जिन्दगी का मकसद तेरे दीन की सरफ़राजी इसलिए मैं मुस्लमा इसलिए मैं नमाजी।***

एक सच्चा हिन्दू वही हो सकता है जो मानवीय मूल्यों को आत्मसात करते हुए नर से नारायण बनने की संकल्पना को अपने जीवन में चरितार्थ करता हो एवं इस जीव जगत के हर प्राणी में ई"वर देखता हो, जिनके जीवन–द"र्न व आचार संहिता का आधार ही सत्य व अहिंसा है। लोग कहते है कि भारत का अपना कोई धर्म नहीं है। यह बात आ"ांक तौर पर भी सही हो सकती है और पूरी तरह भी। लेकिन यहीं की आध्यात्मिक गरिमा है कि संसार के सभी धर्म संस्कृति परंपराएं यहाँ समाहित हैं, जैसे सागर में सरिताएं। समुद्र का जल जिस तरह किसी एक जला"ाय या सरिता का प्रतिनिधित्व नहीं करता उसी तरह भारत भी किसी संगठित धर्म का प्रतिनिधि नहीं है। ऋषिमुनियों ने गाया

है कि दुनिया एक है सिर्फ आपके अपने अहम् इच्छाएं और वासनाएं उसे बाँटती हैं। धर्म परंपरा के अनुसार चार आठ बारह सोलह या बत्तीस संस्कार होने के बावजूद भारतीय धर्म किसी व्यक्ति को सीमा में नहीं बाँधता। क्योंकि उसकी दृष्टि परमात्मा के उस रूप को देखती है जो दुनिया से अलग नहीं है, बल्कि कण–कण में समाया हुआ है।

मनु द्वारा प्रस्तावित धर्म की परिभाषा है– **''धृतिः क्षमा दमोअस्तेयं भाोचं इंद्रिय निग्रहः। धीः विद्या सत्यं अक्रोधो द"ाकं धर्म लक्षणम्''** अर्थात् धर्म के दस लक्षण है, धैर्य, क्षमा, मानसिक संयम, अचौर्य, सफाई, इंद्रिय संयम, विवेक, ज्ञान, सत्य तथा अक्रोध। धर्म के यह दस लक्षण किसी कर्मकांड के बजाय नैतिक मानवीय मूल्यों को ही द"ार्ाते हैं।

महाभारत में जिक्र आता है कि **''धरति धारयति वा लोक इति धर्मः''** अर्थात् लोक जीवन को धारण करने वाला तत्व ही धर्म है। **तुलसीदास** अपनी विख्यात रचना **रामचरितमानस** में स्पष्ट करते हैं कि ''**परहित सरसि धरम नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई**'' अर्थात् दूसरो के हित से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने से बढ़कर कोई अधर्म नहीं है। आधुनिक समय मे महात्मा गाँधी जब कहते हैं कि ''धर्मविहीन राजनीति सड़ी हुई ला"ा के समान है,'' तो धर्म से उनका अभिप्राय नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों से ही था।

धर्म के इन तमाम परिभाषाओं से यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि हमें धर्म को किसी पूजा पद्धति व कर्मकांड के रुप में नहीं बल्कि एक कल्याणकारी नैतिक मानवीय मूल्यों पर आधारित आचार संहिता के रुप में स्वीकार करते हुए अपने आचरण में उतारना होगा। आचरण की अच्छाई व शुद्धता ही इस संसार व समाज को स्वर्ग बना सकती है और आचरण की खराबी व अपवित्रता संसार व समाज को नरक के दरवाजे पर ले जाकर खड़ी कर सकती है, शायद इसीलिए किसी ने ठीक ही कहा है कि–

न हवा की है गलती और न दोश नाविक का,
जो लेकर डूबा तुझे वह तेरा आचरण होगा।
घृणा का प्रेम से जिस दिन अलंकरण होगा,
धरा पर स्वर्ग का उस रोज अवतरण होगा।

वर्तमान समय की समस्या और उसका संभावित समाधान :–

धर्मों के संकीर्ण संस्करणों के टकराव, मानवीय मूल्यों के विखराव के चुनौतिपूर्ण समय में हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि न तो हम अतीत में जी सकते हैं और न ही अतीत में लौट सकते हैं। अतीत की अच्छी बातों को सहेजना उसे अपनाना अच्छी बात है लेकिन अतीत में गढ़े मानकों के आधार पर वर्तमान समाज के सभी पक्षों को नकारना गलत बात है। हर समाज अपने समय का मूल्य–वि"वास विकसित करता है। सुख–समृद्धि के मानक तय करता है, संस्कृति का निर्माण करता है। आज अर्थ के

अंधकार ने, उपभोक्तावादी संस्कृति का एक उद्योग के रूप में तब्दीली ने, भौतिकवाद के भद्दी भूख ने, अनंत पाने की अंतहीन लालच ने मानो एक नया सिद्धांत दे डाला है कि 'इस न"वर मनुष्य जीवन में शायद शा"वत् कुछ भी नहीं है। ये सारी चुनौतियां एवं सवाल बेहद गंभीर हैं, जिनका सामना व समाधान बुद्धिजीवियों समाजसुधारकों व धर्मगुरूओं को करना है।

प्रकृति को जीतने व उसे गुलाम बनाने के साथ ही 21वीं सदी, ज्ञान की इस सदी में, उन्मादी युग के इस सदी में, म"ाीन बनते मनुष्य की इस सदी में, अर्थ की प्रधानता वाले इस सदी में, विज्ञान व तकनीक की इस पराकाष्ठा की सदी में, धर्म, राजनीति, दुकानदारी व भ्रष्टाचार के स्वार्थी व अनैतिक गठजोड़ की सदी में, पराएपन की पीड़ा व अकेलेपन के दर्द की सदी में, संवेदनहीन होते मनुष्यों एवं शा"वत नैतिक मानवीय मूल्यों की ह्रास की इस सदी में, समाजसुधारकों, बुद्धिजीवियों व धर्मगुरूओं की यह महत्ती जिम्मेदारी है कि समय, परिस्थिति व परिवे"ा के परिप्रेक्ष्य में धर्म"ाास्त्रों को अद्यतन करते हुए सर्वसमावे"ाी व सहिष्णु समाज का मार्ग प्र"ास्त करें। धर्म जंजीर बनने के बज़ाय जीत की राह दिखाये, आज के समस्याग्रस्त समाज के समस्याओं का समाधान खोजा जाना अपरिहार्य है साथ ही इस तथ्य पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि आज के समाज को न सिर्फ नए समस्याओं का नया समाधान चाहिए बल्कि पुराने समस्याओं का भी नया समाधान चाहिए और इस स्थिति में धर्म, धर्मगुरूओं, समाज सुधारकों, बुद्धिजीवियों व मानवता के उपासकों के पास बेहद गंभीर व जटिल चुनौतियां होंगी और जो समाज इन चुनौतियों का सामना करते हुए सार्थक, संभव व तार्किक समाधान दे पाएगा वह समाज शांतिपूर्ण, सहिष्णु व समावे"ाी भाव से निरंतर सर्वकल्याणकारी समाज की ओर बढ़ता जाएगा। अतः आज आव"यकता इस बात पर विचार–मंथन करने की है कि किस प्रकार विभिन्न धर्मों में व्याप्त आडंबकारी असमानताओं के बजाय उनमें व्याप्त मौलिक समानताओं के आधार पर किसी वै"वक धर्म (Global Dharma) की चर्चा आरंभ की जाए। इस हेतु वै"वक स्तर पर संगोष्ठियों, कार्य"ालाओं, वि"व धर्म सम्मेलनों आदि उपयोगी अपेक्षित आयोजनो के माध्यम से वै"वक धर्म (Global Dharma) के बीज़ विचार को बौद्धिक विम"ा के केन्द्र में लाने का प्रयास करना चाहिए।

उत्तर–आधुनिकतावाद के एक बड़े विद्वान एडवर्ड सईद ने बेहद बारीकी एवं संजीदगी के साथ इस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि वै"वक स्तर पर फैले हर आतंकवाद को 'इस्लामिक आतंकवाद' कहना वास्तविक समस्याओं से मुँह मोड़ना है। आतंकवाद का हर प्रारूप अपने आंतरिक–स्थानीय सामाजिक–राजनीतिक समस्याओं से भी पोषण प्राप्त करते हुए विविध आकार ग्रहण करता है। पं"चमी पूंजीवाद एवं वै"वीकरण के सांस्कृतिक–राजनीतिक आयामों ने अमरीकी व यूरोपीय वर्चस्व की स्थापना व मान्यता के लिए अपने से अलग वैचारिक संरचना एवं सामाजिक–सांस्कृतिक खेमे को मान्यता देते हुए उसे निकृष्ट एवं अपने को उत्कृष्ट बताने का वैचारिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक भ्रम

पैदा किया है। उसने भी आतंकवाद को हवा दी है। इन बातों की विस्तृत वि"लेषण हमें एडवर्ड सईद की प्रसिद्ध पुस्तक 'Orientalism' में मिलती है।

सभी धर्मों के मूल तत्वों की यदि बात की जाय तो यह स्वयंसिद्ध है कि हरेक धर्म का संदे"ा सत्य, शांति, अहिंसा, परोपकार, सर्वहित व जगत कल्याण है। धर्मपरायण व्यक्ति के जीवन का धर्म ही परोपकार व जगत कल्याण हेतु अपने प्राणों तक की आहुति दे देना है। धर्म का अर्थ ही तो 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय', 'जीयो और जीने दो' है। सारे शुभ, औचित्य एवं नैतिकता का मार्गद"ान, निर्दे"ान व निर्धारण धर्म के मूल तत्व से होता है। धर्म सर्वहित की सर्वोच्च बिन्दु व नैतिकता की पराकाष्ठा है। धर्म व्यक्ति के विवेक को जागृत कर सर्वहित में स्वहित की दृष्टि प्रदान करता है। धर्म शरीर का उसकी आत्मा के साथ साक्षात्कार कराता है। ऋग्वेद के अनुसार ''धर्म ही वि"व का मूल तत्व या आधार है।'' तो फिर धर्म बुरा कैसे है और ना यह बुरा हो सकता है। धर्मपरायण व्यक्ति की दृष्टि में आसमान का विस्तार दिखायी देता है और उसके दिल में धरती की धड़कन सुनाई देती है।

प्रसिद्ध समाजवादी विचारक कि"ान पटनायक ने भी अपने चिंतन व लेखन में अफ्रीकी व ऐ"ियाई दे"ाों के तमाम आतंरिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व नृजातीय समस्याओं की जड़ प"िचमी पूंजीवादी दे"ाों के नव–उपनिवे"ावादी नीतियों में बताया है। हमें इन तथ्यों की गहन पड़ताल करनी होगी नहीं तो हम समस्या को समझे वगैर समाधान निकालकर उसे थोपने का प्रयास करेंगे जिससे न सिर्फ वर्तमान समस्या ज्यादा जटिल होती जायेगी बल्कि और नयी समस्याएँ वै"िवक पटल पर दस्तक देने लगेंगी।

निश्कर्श :–

आज सम्पूर्ण मानव जाति को मानवीय मूल्यों, पर्यावरणीय मानकों व शांति के संदे"ावाहकों के नींव पर खड़ी सिद्धांतों का ऐसा धर्म चाहिए जिसकी परिधि में सम्पूर्ण संसार का संपूर्ण जीव–अजीव जगत आता हो और समय रहते यदि हम ऐसा नहीं कर सके तो मानवता तो संकट में है ही आने वाले समय में सम्पूर्ण मानव सभ्यता ही संकट में पड़ जाएगी और हो न हो किसी अतीत की तरह याद करने वाला भविष्य भी इस पृथ्वी पर शेष न रहे। हमें इस दि"ाा में यथासंभव शीघ्रता से वै"िवक स्तर पर विचार–विम"र् की परंपरा विकसित करनी होगी।

कागज़ के नक्"ो पर खींची गयी बेजुबान लकीरों ने दोनों मुल्कों (भारत–पाकिस्तान) के लोगों के जजबातों से खेला है। प्रेम को सीमा में बांधने, उसकी संकीर्ण परिभाषा गढ़ने एवं हृदय पटल पर एक बड़े दीवार का निर्माण करने का काम किया है। संकीर्ण सियासत के जंजाल में इंसानियत हमे"ाा तार–तार होती रही है। हमें राज्य भक्ति एवं राष्ट्रभक्ति के बीच व्याप्त खाई को पाटना होगा। राज्य भक्ति व राष्ट्र भक्ति के विरोधाभासों से उबरना होगा। राजनीतिक परिधि व भौगोलिक सीमा से परे हमें सांस्कृतिक सीमा व सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की परिधि में प्रवे"ा करना होगा तभी हम एक अच्छे परिवार व अच्छे पड़ोसियों का

निर्माण कर पायेंगे। अच्छे पड़ोसी रहने से सम्बन्ध भी अच्छे होते हैं और अच्छे संबंधों के रहने से ही हम अपने पड़ोसियों के साथ अपने सुख–दुख को सहृदय साझा कर पायेंगे। भारत में साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए यह बेहद जरूरी है कि हमारे संबंध पड़ोसी राष्ट्रों (पाकिस्तान, बांग्लादे”ा, अफ़गानिस्तान, नेपाल) के साथ सरल, सहज, सरस, सहिष्णु, मधुर व मित्रतापूर्ण हो क्योंकि इन राष्ट्रों के साथ हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक व पारंपरिक जुड़ाव है। धर्म, संस्कृति व परम्परा की परिभाषाएं किसी राजनीतिक–भौगोलिक सीमा को नहीं मानती हैं। बंदि”ा शरीर पर, वाह्य आचरण पर लग सकती हैं लेकिन मन को कभी जंजीरों में नहीं बांधा जा सकता है, आंतरिक आचरण किसी वाह्य सत्ता को नहीं मानती हैं। उसकी अपनी स्वयं की स्वतंत्र सत्ता होती है, जिसका प्रभाव हमें कभी–कभी वाह्य क्रिया–कलापों में भी नजर आता है। शायद यही कारण है कि बाबरी मस्जिद विध्वंस (6 दिसम्बर 1992) की घटना एक स्थानीय घटना होते हुए भी इसका वैि”वक प्रभाव दिखा। जहाँ एक ओर इसके विरोध में पाकिस्तान में सैकड़ों मंदिरों को तोड़ा गया तो दूसरी तरफ बांग्लादे”ा में हिन्दू अल्पसंख्यकों की निर्मम हत्या की गई जिसका मार्मिक चित्रण तस्लीमा नसरीन की किताब ‘लज्जा’ में पढ़ने को मिलती है। इस्लाम रक्षा, जिहाद आदि का नक़ाब पहने आतंकवादी गुट (ISI, अलक़ायदा) आधुनिक हथियारों के सहारे मध्यकालीन मूल्यों को स्थापित करने की बात कर रही है और पि”चमी विकसित दे”ाों के साथ–साथ विकास”ाील दे”ाों के ना सिर्फ बेरोजगार युवा बल्कि तेज तर्रार ि”ाक्षित युवा भी इसमें सहर्ष शामिल हो रहे हैं। ज़न्नत की चाह में अपनी इस ज़िन्दगी को ज़हन्नुम बनाये जा रहे हैं जबकि आज तक इस पृथ्वी लोक से परे किसी ज़न्नत के अर्थ व अस्तित्व को लेकर ज्ञान की इस सदी में, विज्ञान की सदी में न सिर्फ विज्ञान मौन है बल्कि धर्म के गुरूओं के पास भी इसका कोई स्पष्ट जवाब नहीं है। ये तमाम बातें हमें कई तरह के समस्याओं के प्रति अग़ाह करती हैं और साथ ही समय रहते इन समस्याओं का सार्थक समाधान के प्रति भी सचेत करती हैं। इसलिए हमें साम्प्रदायिक सौहार्द जैसे बीज विचार को स्थानीय स्वरूप के साथ–साथ वैि”वक वैचारिकी के विम”ार्ा केन्द्र में भी लाना होगा। मैं मानता हूँ कि यह सफ़र आसान नहीं है लेकिन एक सच यह भी है कि सफ़र की शुरूआत ही उसे अंजाम तक ले जा सकती है–

यूँ ही नहीं मिलती है मंजिल,
दिल में एक जुनून से जगाना पड़ता है।
मैंने पूछा चिड़िया से कैसे बनता है आि”ायाना,
वह बोली भरनी पड़ती है उड़ान बार–बार,
तिनका–तिनका उठाना पड़ता है।

हमें छद्म राष्ट्रवाद से उबरना होगा और **रजनी कोठारी** के शब्दों में हमें एक लोकतांत्रिक राष्ट्रवाद की तरफ बढ़ना होगा। किसी भी मुसलमान को दे”ाभक्त बनाने की कोई आव”यकता नहीं है उसे बस एक सच्चा मुसलमान बनने दीजिए वह दे”ाभक्त खुद–ब–खुद बन जाएगा। यह बात स्वयं **महामना** के इस

कथन से स्वतः स्पष्ट हो जाती है जब महामना की उपस्थिति में अबुल कलाम आजाद नमाज पढ़ने से संकोच कर रहे थे तब महामना ने अबुल कलाम आजाद से कहा था कि तुम सच्चा मुसलमान बने बगैर एक सच्चा दे"ाभक्त कतई नहीं बन सकते हो।

महामना के धार्मिक व परमार्थी व्यक्तित्व को परिभाषित करती उनकी ही दो पंक्तियाँ–

''मैं राज्य की कामना नहीं करता, मुझे स्वर्ग और मोक्ष नहीं चाहिए।

दुःख से पीड़ित प्राणियों के कश्ट दूर करने में सहायक हो सकूं, यही मेरी कामना है।''

धर्म मूलतः नैतिक मानवीय मूल्यों पर आधारित जीवन–द"ान व आचार–संहिता है। इससे इतर धर्म की कोई भी परिभाषा धर्म को प्रदूषण के बहुआयामी स्वरूप की सीमा में प्रवे"ा करा देती है। धर्म के नाम पर आतंक करना अन्याय करना है जो समाज में अ"ाांति, असहिष्णुता व असुरक्षा को फैलाकर समाज को नरकीय अवस्था की ओर ले जाती है। जो अधर्म व अन्याय की नि"ाानी है। धर्म और अधर्म एक–दूसरे के विपरीत है न कि पर्यायवाची धर्म का रास्ता स्वर्ग की ओर अधर्म का रास्ता नरक की ओर जाता है। लेकिन फिर भी वर्तमान परिस्थितियों में धर्म की दुकानदारी के नाम पर जो मजहबी आतंकवाद (Religious Terrorism) का प्रारूप उभर रहा है। उसे देखते हुए या तो धर्म को सार्वजनिक मामलों से दूर महज़ निजी मसला घोषित करना चाहिए या फिर सभी धर्मों के मूलतत्त्वों को मिलाकर धर्म की एक सर्वमान्य सार्वभौमिक परिभाषा गढ़ कर उसे एक वै"वक आचार संहिता व जीवन–द"ान के रूप में मान्यता मिलनी चाहिए शायद तभी हम स्वर्ग से भी सुंदर समाज का निर्माण कर पाएगें।

मेरे इस शोध प्रपत्र को शायद पारंपरिक पि"चमी मानकों के आधार पर एक शोध प्रपत्र समझा ही न जाए लेकिन मैं यह मानता हूँ कि समाज"ाास्त्र समाज का आईना होता है, समाज के सच को सामने रखने की कोि"ा"ा करता है। सच को यदि कोई पो"ााक पहनाया जायगा तो उसे पहचानना मु"किल हो जायेगा। हमें समाज के सच को उसके नंगे स्वरूप में ही स्वीकार करते हुए उसे समझने की कोि"ा"ा करनी चाहिए। दूसरी बात जिस प्रकार 'Medical Science' शारीरिक व्याधियों का इलाज व समाधान खोजता है ठीक उसी प्रकार समाज विज्ञान की सार्थकता व प्रासंगिकता इस बात से तय होती है कि वह समाज के व्याधियों, कमजोरियों व समस्याओं का सार्थक व व्यावहारिक समाधान खोजे। एक सफल, स्वस्थ शांतिपूर्ण सहिष्णुतामूलक व सौहार्द्रपूर्ण समाज की परिकल्पना एवं उसे प्राप्त करने की दि"ाा समाज विज्ञान के माध्यम से ही निकाला जा सकता है साथ ही इस हेतु हमें वैचारिक हवाबाजी के बजाय वास्तविक–व्यावहारिक धरातल पर उतरना होगा। समाज विज्ञान, विज्ञान बनने के चक्कर में कहीं अपनी प्रासंगिकता व सार्थकता ही न खो दे, कुछ ऐसा ही संकट 50–60 के द"ाक में व्यवहारवाद के प्रचलन से आया था और डेविड ईस्टन जो व्यवहारवाद के बड़े पैरोकार थे। सन् 1969 में ही स्वयं उत्तर–व्यवहारवाद की वैचारिक व बौद्धिक आन्दोलन की नींव रखी। समाज के वर्तमान एवं संभवित समस्याओं का समाधान समाज विज्ञान से आ सकता है साथ ही विज्ञान व तकनीकी के उन्नति को एक मानवीय मूल्यपरक

दि"ाा–निर्दे"ा समाज विज्ञान ही प्रदान कर सकता है। हमारे हरेक शास्त्र का विकास, पहचान व प्रसिद्धि का आधार मानवतावाद व जगत् कल्याण होना चाहिए।

महात्मा गाँधी का मानना था कि ''अन्तःकरण का जागरण ही धर्म है।'' डॉ0 भीमराव अम्बेदकर का मानना था कि ''सिद्धान्तों का धर्म होना चाहिए। मानव धर्म के लिए नहीं बल्कि धर्म मानव के लिए है। समस्त जीवन जगत को सुखमय व शांतिमय बनाना ही धर्म का उद्दे"य है। अतः यह कदापि संभव नहीं हो सकता है कि धर्म जीये और मानव मरे।''

प्रस्तुत विषय पर बौद्धिक संवाद का सिलसिला कभी समाप्त नहीं हो सकता है। अतः मैं **डॉ0 गोपालदास नीरज** के दो–चार पंक्तियों के साथ अपने इस विम"ार्ा को विराम देना चाहूँगा–

अब कोई मजहब ऐसा भी चलाया जाए।
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।
मेरे दुःख–दर्द का कुछ ऐसा असर हो तुम पर भी,
मैं जो भूखा रहूँ तो तुमसे भी न खाया जाए।
अब कोई मजहब ऐसा भी चलाया जाए,
जिसमें रोज़ा तु रखे और रमजान मेरे घर मनायी जाए।
अब कोई मजहब ऐसा भी चलाया जाए,
जिसमें रमजान अली भी रामगली से गुजरते हुए गीत मोहब्बत गाता जाए।
अब कोई मजहब ऐसा भी चलाया जाए,
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाए।।

सन्दर्भ सूची :–

1. 'Art of living' के संस्थापक श्री श्री रवि"ांकर का धर्म व जीवन संबंधी व्याख्यान व लेख– स्रोत– U-tube, समाचार पत्र, आस्था टी0वी0 चैनल
2. कुमार, विजय : अंधेरे समय में विचार, संवाद प्रका"ान, मेरठ–25004, 2006
3. पटनायक, कि"ान : विकल्पहीन नहीं है दुनिया, राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली–110002, 2015
4. समाचार पत्र– अमर उजाला (वाराणसी, यू0 पी0)– 28/12/2015
5. चतुर्वेदी, जगदी"वर : साम्प्रदायिकता, आतंकवाद और जनमाध्यम, अनामिका पब्लि"ार्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0 नई दिल्ली–11002, 2005
6. वर्मा, डॉ0 वेद प्रका"ा : धर्म द"ान की मूल समस्याएं, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदे"ाालय दिल्ली वि"वविद्यालय, दिल्ली, 2003

7. नाइक, डॉ0 जाकिर : गलतफहमियों का निवारण (इस्लाम के बारे में गैर–मुस्लिमों के सामान्य प्र"नों के उत्तर), मधुर संदे"ा संगम, नई दिल्ली, 110025
8. उपाध्याय, पंडित दीनदयाल एकात्म मानव द"ान, सुरूचि प्रका"ान, नई दिल्ली, 110055, 2014
9. मल्होत्रा, राजीव, विभिन्नता : पा"चात्य सार्वभौमिक भारतीय चुनौती, हार्परकॉलिंस पब्लि"ार्स इंडिया, 201301, 2013।